

जातक जालि-दीर्घ—

१३४०/४० धर्मरत्न राजाचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 187

२ विहलः
 २ रकालुयाहा
 २ याकाकायडु लमिसायाडुडु
 २ नोलसया नोस चुला ओमिसासडु लेमिसा

॥ योगिनाथ ॥

श्रीगणेशायनमः॥ अथ ज्ञातकजनविधिः ॥
पितुर्जातइति॥ जन्मलग्नकनचंद्रमालेन देष
तः पिता घरन हो ॥ १॥ अष्टमदशमस्थानकोस्त
थै चररासिमा होत तस्य पिता विदेश हो ॥ धिररा
सिमा होत तस्मिन् ग्राम हो ॥ द्विष्ट भाव भानोश्च

न्यग्रामे वापथे वाः पथनाम वातो ॥ लग्नकनच
ंद्रमालेन देषटः लग्नदेषिदशमचतुर्थस्थान
भै चररासिकोस्तथै होत तस्य पिता योगांत हो
॥ १ ॥ उदय स्थिति ॥ चंद्रले लग्नकनन देषन
लग्नकोशनी होत पिता घरन हो ॥ चंद्रले लग्न

नदेषन्ः सातो भौस होवाः लग्नको होवा तस्थपिता
घरन होः यत्र तत्रैको च दुमाः बुधश्चक्रका माऊ
मा होत पिता घरन हो ॥ २ ॥ शशांकपापलुगेति
मेषे विहृदे फलको च दुमाः लग्नको पापग्रह
आः रक्षादसौ अभग्रह हत नतः सर्पवेष्टित जन्म

हो ॥ ३ ॥ चतुष्पदेति ॥ चतुष्पदः मेष वृषसिह
धनकोः आधापलो भाग मकरको आधा व
हो भागः इनरासिमा सूर्ये वस्था हवतः अरु
सर्वे द्विष्ट भावरासिमाः भौस वलिया हवतः य
मल्लुङ्ग जात कभंनुः कोशवेष्टित भैजन्मा

कुम्भः ॥ ४ ॥ ह्यगसिंहेति ॥ मेष वृषसिंहलग्नह
वतसैलग्नकोशनीहोवाभौमहोः युक्तभयाः नाल
वेष्टितभैः जन्मो भन्तुः ॥ जो लग्नको नवाशाह तेसै
को स्वामिः तेसै अंसा युक्तभयाः नाल वेष्टितभै जन्
मो हो भन्तुः ॥ नलग्नेतिः चंद्रकान्तप्रनिलग्नकनपनी
गुरुनदेषतः जा रजातहोः ॥ रविचंद्र एकरासिगो

गुरुनदेषे तदापरजातः चंद्रार्जोः एकरासि
होवा भिन्नरासिहोपापग्रहसंश्रुकरविहोवाः
चंद्रहोतदापरजातहो ॥ धनमीनरासिहोवाः ध
नमीन अंसा धनमीनदेकाराको चंद्रमानजा
रजातः स्वजातभन्तुः ॥ ६ ॥ क्रूरहति ॥ क्रूर

क्रूरश्वक्ष॥१॥५॥८॥१०॥११॥कृष्णपक्ष४
पापयुक्तबुध६।३॥एतिरासिमाःभौमहोवा
सनीहोवाःयुक्तभैरवसूर्यदेवि७।८।५परत
तस्कोपितावश्वनपरः॥सूर्यचररासिहोत
परश्वन्यदेशःस्थिररासिहोतस्वदेशःद्विस्व

भावपथि॥७॥पूर्णेक्षसिति॥पूर्णेचंद्र
भैःकर्कटरासिकोहवनःलग्नकोबुधचैथा
श्रमग्रहगुरुहोवाश्रुहवनःदुर्गामापस
तिभैभंनु॥८॥आयोदयति॥मकरकोश्र
धपल्लोभाशःकुंभमीनलग्नहवसुतनैजर

रासिको चंद्रमा पूर्ण भैव सूर्यः जलमा प्रसू
ति भै भंनुः थवा जल रासिको लग्न हव सः पूर्ण
चंद्र भैः शं पूर्ण लग्न देष नतः जलमा प्रसूति
भै भंनुः ॥ अथवा जल रासिको लग्न चौथो द
सौ चंद्रमा भयाः जलै मा प्रसूति भै भंनुः ॥ ९ ॥

उदयोऽप वेति ॥ जन्म लग्न को चंद्रमा वाङ्मोः श
निपाप युक्त होत गुप्त धान प्रसूति भै भंनुः ॥
वधसा इति ॥ चरस्थे परदेशः स्थिरस्थे स्वदेशः
द्विस्वभाव पथिः वृश्चिक कर्कटस्थे मंदे ॥ विद्व
कर्कटको शनिः पापा युक्त भै वाधो परतः लग्न

कोचद्रमादृष्टिहोतः गर्तप्रदेशप्रसूतिः॥ १०॥
जररासिको लग्नः शनियुक्तभैः बुधकिदृष्टिहो
तः रुद्रा. गृहमाप्रसूतिभैः भनुः तेसैविधिके
लग्नशनिरुवन्ः सूर्यकी दृष्टिहोतः देवास्था
नभनुः तेहि विधिः चंद्रकी दृष्टिहोतः खलेवा

नुवासाभनुः॥ ११॥ नलग्नेति॥ जररासिको
लग्न. शनियुक्तभैः भौमकिदृष्टिहोतः मशानमा
प्रसूतिभैः भनुः जररासिः लग्नशनियुक्तभैः अ
रुद्रदृष्टिरं मशानमाभूतिभनुः तेसैविधिः चंद्रदृ
ष्टिरम्यः तेहि विधिगुरुदृष्टि अग्निसालाभूति॥

तेहि विधि रवि दृष्टि राजगृहे देवांगारे गोक्र
लेः तेहि विधि बुध दृष्टि शिल्पालय चित्रका
रगृहेः अथ विदिते तस्को विपरित भयाः आ
फने गृहमा भनूः तेहि विधि भौम दृष्टि आरण्या
॥ १२ ॥ रास्या सेति ॥ चरलग्ने चरांसे मार्गपंथा

प्रसूतेति ॥ मेषलग्ने कर्कासे योजन ४ ते सैतुल्ये
सर्वे च लग्न चरांशको विचारगर्भः ॥ मेषलग्ने से
प्रांसेः कर्कटलग्ने कर्काशे तुला लग्ने तुलासे
मृगलग्ने मृगासेः इन लग्न आसा भयाः आपना
परजन्मो भनूः लग्नको स्वामि वलियो भयाः ल

मनदेविजति ठाउ माव स्या तनिटा टा अंशा
को स्वामि वलियो भयाः तस अंसा देवि विवा
रगर्जु को सजो जन ॥ १३ ॥ अशुकेति ॥ शनि भो
मयुक्त भैल गन देविः न वस यं वस स्या न मा ह व नः
चंद्र मा सप्त म स्थान को होत मा ता न्य ती तो हते

हि विधि चंद्र कन गुरु कि दृष्टि भयाः त्यो जात क
दीर्घायु होः अवि हो ॥ १४ ॥ पापे दितेति ॥ लग्न को
चंद्र शनी को दृष्टिः सा तो भो म होत मा त्र वाल क द
यो मृत्युः ॥ लग्न को चंद्र सूर्य की दृष्टि ह व सः चंद्र
देवि एका दसौ शनी भो म ह व त मा ता मृत्यु ते ॥ ल

ग्नको चंद्र सप्तम स्थानको भौम चंद्र कन प्रभया
यो देव नुत माता त्वक्ताः चंद्रमा कन गुरु किं शुक्र
किं दृष्टि भयाः ब्राह्म न हात त्वो वाल कं जाला भंनुः॥
चंद्र कनः सूर्य किं दृष्टि भयाः शत्रिका हात जाला
भंनुः॥ लग्नको चंद्र पाप युक्त भैः भौम सातो यो व

हमनादि ग्रह वलियो हत स्य वर्ण हस्तो मृत्युः॥ १५॥
पित्रि मात्रेति॥ जन्म लग्न कनः सूर्य शनी किं दृष्टि हो
त मात्रि गुरु होः चंद्र बुध गुरु शुक्र दून चारे ग्रह
नी च स्थान को कुंत चक्ष कानजिक नदि क्रयः तदंग
पर्वत कानजी क माघ सति भै भनुः शुभग्रह नीचः

अक्रगुरुवृधनिचस्थानकाहुउनःचइसासेल
नकननदेवनतःमनुषकोहिहैननकेप्रसूति
मात्रहमनु॥एकरासिगतेवहुनियहैचइसा
लेदेवतधरेमनुषकाभाऊमाप्रसूतिभैभनु॥
अक्रगुरुनिचस्थानकाहुउनःलग्नकावृधकि

दृष्टिलग्नकोचइसाभयाःआरंभवनमाप्रसू
तिभैभनु॥ १६॥महसांशेशशिनिति॥यत्र
तत्रैजुसेकैरासिकोभैमकरकोहोवाकंभअंसा
माचइसाभयाःदपसांतभयोदेहोभनु॥लग्नदे
पिचौधोचइसाभयायनिअश्वकारःयत्रतत्रैको

समस्त संन्यास्य मूर्त श्री महाबिहार

DH 187

जातक वि वि - ॐ

DH 187

चंद्रमा शनियुक्त भयादृष्टि भयापनि अंधकाल हो
भनु॥ कर्काशको चंद्र भयापनि अंधकारै भनु॥ च
ंद्रमा कनः सूर्ये कि दृष्टि भयापनि अंधकारै भनु॥
सयनं निच भूमिः॥ हरिजमीति॥ श्रीर्षोदया ३। ५। ६।
७। ८। ११। इन लग्न प्रसव होत उर्द्ध मूष हो॥ पक्षोदय

१। २। ४। ९। १०। इन प्रव होत मधो मूष॥ १२। एस ल
ग्न पार्श्वको ल्ये भैज न्यो भनु॥ जो जन्म लग्न तसै ल
ग्नको स्वाभि तसै लग्न का अंसा को तसै लग्न भावस्था
को ग्रहः इति न ग्रह माः एक वक्र भयाको भया न्यो जा ग्न
तक विपरित गरिज न्यो हो भनु॥ लग्नको होवा लूहे

षि चौथो हो वाः लग्न देषि सातौ पाप संयुक्त भैः चंद्रमा
वसुतः मातुल्लेश होः॥ तसै ठाउ को चंद्रमा पाप संयुक्त
भैः चंद्रमा का सातौ पाप ग्रह हउ नू मातुल्लेश हो भनु
॥ १० ॥ स्त्रे हेति॥ जन्म काल विषये सा चंद्रमा ले भोग
गत्या कारासि को विचार गरी आद्य मध्य अंत्यः पूर्ण म

ध्य स्वल्प ते लजां नुः॥ पूर्ण चंद्र पूर्णः क्षीन चंद्र स्वल्पः
असा वा स्यां अंधकारः॥ वर्तिल गेतिः आद्य मध्य अ
ंत्यः पूर्ण मध्य स्वल्पः॥ वर्तिल दाहः॥ दिप अर्जक दृष्टेयु
क्तैः थवा द्वादशां सा मायुक्त भयापनि दियो वल्को हो
भनुः॥ चर रासि को सूर्य भयाः संक्षय सूक्ष्म उज्ज्या लो

होमनुः॥ दिस्व भावको सूर्य भया वलित को उज्या लो
होला भनुः॥ स्थिर रासि सूर्य भयाः दियो वल्यो होमनुः॥
सूतिः सूतिका गुरु द्वारः॥ सूर्य के इवर्ति भया पूर्व श्र
क आग्नय भौम दक्षिण राहु नैऋत्य शनि पश्चिम च
द वायव्य बृध उरुर गुरु ईसान ॥ के इवर्ति वज्र

तै भया यो वलवान् दत्त सै कादि सा द्वार भनुः॥ के इ
श्रुने को नै ग्रहनय न्या १। ५। ९ पूर्वः २। ६। १० दक्षिणः
३। ७। ११ पश्चिम ४। ८। १२ उरुरः

वाल्मीकि

धार्मिकतिथि १५ मासा १२ दशा १० वृद्धा द ४ शं
क्रांति तोजाः तदिनश्च यो य्या ग्रहै वि भन्त्या यदि
पञ्चक स्याः रोगस्तदग्नि नृप नौर मृत्यु ॥ ॥
वाल्मीकिप्रमाण ॥ ॥ तिथि १५ मास १२ दश

१० अष्ट दवे द ४ थुकि स क्रान्ति वागु कृताने ॥ शु
नं २ भाग काये तापतिं थाने ५ वाकि जुलसा ॥ रोग
वान ॥ १ ॥ नेता गुलि ५ वाकि जुलसा ॥ अग्निः
वान ॥ २ ॥ दधु गुलि ५ वाकि जुलसा ॥ नृपः

बारा ॥ ३ ॥ येतागुलि पवाकि जुलसा ॥ चौरवान ॥

॥ ४ ॥ दानगुलि कोने पवाकि जुलसा ॥ मृत्युवान ॥

थुग भेद नवान स्वयं जुलो उभं ॥ ॥ अग्नि ज्ञान

सखे दने नैव ॥ १ ॥ राज बारा सखा थदय के:

भते व ॥ २ ॥ चौरवान सचा करिया वने मत व ॥ ३ ॥

मृत्यु बारा सवि चालया यम ते व ॥ ४ ॥ रोग वान स

ओषधि दय के मत व ॥ ५ ॥ १ तिथि वारं व नक्षत्रे

नामा शर संयुक्त नव भिस्तुरे भाग सेष को वा ह

न उचेते ॥ ० ॥

१ गउयो । शदाहा ॥ वाजिना । सल ॥ दत्तिर । किसि ॥
मेवापे ॥ जल्युका । धल ॥ केशरि । सिंह ॥ काका
कोष ॥ मयूर । ह्रस्वखा ॥ हंसा । शज हंसः ॥ १
गउहा । सभिं ॥ सल ॥ शब्देम ॥ किसि ॥ लाभ ॥

पैया ॥ नये दयु ॥ धलया ॥ भंगजुयु ॥ कोखया ॥
कष्टजुयु ॥ सिंहया ॥ शत्रुनास ॥ ह्रस्वखाया ॥
हंसया ॥

कूटसलानसाः शङ्खभयदयः नानाहानिजुयुगलुश
कफरोगजुयु॥ जओवाकसः जयलाभाः चूल्यासः शङ्खभयः
॥ पालोहानिसः श्वकरकरजभया॥ करचूकलिसरेण
भयं॥ पालिसः हिषंडः चालजुयु॥ पालिसः प्रसनभयं॥
दीसः शङ्ख॥ मिसायाजुलसारकातिसालजुयुः मृत्पुजुपु

॥ हृदयः श्रीसपत्तिदयु॥ कीलुशः समैतिमान्यजुयु॥ मिसाया
जुलसाः स्वामिताशजु॥ नेत्रसः सुखपीतिपथगो॥ पेषसः
पेषरोगनमृत्पुभय॥ जापमालासलानसाः दुःखजुयु॥ मिसा
याशिलसः लानसाः शनीश्वपादजालधाय॥ जओसलानसा
पुत्रयाकेदियिओ॥ दधुकोलासः लानसाः पुत्रयाकेदियिओ

ष ओसलानसा धनसदियिओ, थुलिमिसाया, बिलसला
कथाफल॥ ष ओ वाडुस हानि जुयु॥ ष ओ चल्यास, रोग,
ष ओ यापाला हानेस, लक्ष्मी दयु॥ नेकुस भग्यफल जुयु॥
ष ओ कतिसलानसा भयदयु॥ ष ओ पोलिस, जो लभय॥
ष ओ पालिस, नुगरसयथा वचन, यमदण्डसमहादयु॥ १०

ष नैश्वरनभोगयाकगुन वचन, कुसुनयाओ, थ ओ
नक्षत्रलाकथासया, फलसोच जुले॥ ॥



मन्त्रादयके आसा

रताग केशजपु व्यातां: चूर्णयत् गोसर्पिषा समं।
पीत्वा स्त्री लभते पुत्रं रतौ दुग्धा न्न भोजनं॥ अन्नं च।
वीजानि मातुलिगस्य: दुग्धास्य न्नानि सर्पिषा। स
गर्भानि कुर्वन्ति: पानाद्देव्यापि स्त्रियां॥ ॥

रिलपटितोला १ रोदति मंसं दसिखारहा मंसं दकेटकि
हामंसं दसमखारमंसं दससंसं दधते नापंचूफसनि
याडा भनचासथं वंगालसफिसंते दीनकुटसा
हिजाहयायजुल॥